नाम्यम आध्याय

स्वातन्त्र्योल्लर संस्कृत महाकाव्योः में
राजराधावण्ड व नाम अन्तरराजराधावण्ड।
अध्याय 7

स्वातन्त्रयोतर संकृत महाकाव्यों में राज्यवाद बनाम

अन्तरिक्षीयाद

राज्यवाद को स्पष्ट करने के लिए राज्य शब्द को समझना आवश्यक है। "राज्य" शब्द दोपधाराक "राज" और "राज्य" से "सर्वभाष्य: कुटुंब" इस उपादि प्रत्यय के संयोग से बना है। 1 इस व्युत्पत्ति के अनुसार राज्य का अर्थ है - "पशुपाठ-पौर्णिमांसंपद राजते शीतोष्ण इति राज्यम" अर्थात् वह पौर्णिमा आदि समयावधि के मुख्य मात्रा को राज्य है।

संकृताः, हिंदी तथा अंग्रेज़ी भाषा के कोषों में "राज्य" शब्द के जो अर्थ दिया गया है, उनमें प्रमुख हैं - जनवर, खेत, सागर, जलवा, जलि, राज्य तथा किसी एक शासन में रहने वाले तब लोगों का समूह इत्यादि।

डा. हरिनारायण दीक्षित ने ब्रो एम. मैनियार विलयम द्वारा "संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी में राज्य के लिए प्रशस्त "डिक्शनरी" शब्द तथा वामन सिंहराम आप्टे के "संस्कृत हिंदी कोष" में राज्य के लिए प्रशस्त राज्य शब्द पर आप्ट उठाया है। 2 वास्तव में डिक्शनरी अंतर्यां राज्य शब्द राज्य की अर्थ गरिमा और विशालता के लिए है।

राज्य का अंग्रेज़ी वर्तमान शब्द "नेशन" है। राजनीतिक और इतिहास के अनुसार यह लेटिन भाषा के नैटस "Natus" से निकला है।

1- संकृतलिपिआँ कोश: राजा राधाकृष्णदेव बहादुर, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, 1961 ई., मार्ग 4, पृ. 158।
2- संकृत तालिकाः राज्य भाषा, डा. हरिनारायण दीक्षित, देववाणी परिषद दिल्ली, पृ. 1983 पृ. 4।
जिसका अर्थ "जनम" या "जाति" है। इसी लिए राजनीतिक तिथियों के "राष्ट्र" की परिभाषा देते हुए जनम एवं जाति पर विशेष बल दिया है और ऐसे मानव समूह का राष्ट्र कहा है, जो जनम एवं जाति के कारण परस्पर एकता के सूत्र में बैठे हो। इस सम्बन्ध में प्रोफेसर बर्ग्स की परिभाषा विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्होंने जातीय आदर्श पर विशेष बल दिया है - "राष्ट्र जातीय एकता के रूप में बैठी हुई वह जनता है जो किसी अलग भौगोलिक प्रदेश में निवास करती है।" 1 कार्ल्सन के एवं हेव के राष्ट्र की परिभाषा देते हुए लिखा है -
"राष्ट्र जाति ऐसे मूल्यों का सांस्कृतिक समाज है, जो एक ही भाषा बोलते हैं और जिनकी ऐतिहासिक परम्पराएँ (यूं किन्तु, जैविक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, कलात्मक और वैज्ञानिक) समान हैं।" 2 रेम्से प्यूर के मताधिकार "राष्ट्र वह जन समुदाय है जिसके सदस्य अपने के स्वाभाविक रूप से एकता के लिए अनुभव करते हैं, जो इतने लोगों में वैरपना समझना अनुभव करते हैं, जिसके कारण वे प्रत्येक परस्पर समस्त रह सकते हैं। पृथ्वी हो जाने पर तूफान होते हैं और ऐसे लोगों को अधिनता सहन नहीं कर सकते, जो उन बन्धनों के

1. "A Nation is a population of an ethnic unity inhabiting a territory of a Geographical unity."
(Burgess: Political Science and Constitutional law Vol.1)

2. Hence I would define nationality as a cultural group of people who speak a common language (or closely related dialects) and who possess common historical traditions (religious, territorial, political, military, economic, artistic and intellectual)."
(Carlton J.H. Hayes: Nationalism, A Religion)

उपरोक्त गुणों - आर्थिक राजनीतिक विविधताओं : इत. सर्वाधिकोत्तर
हैं, पृ. 348.
राजनीतिक रिपब्लिकर द्वारा प्रस्तुत की गयी उपर्युक्त परिभाषाओं में जिनों ने जातीय एकता, जिनों ने सांस्कृतिक एकता और जिनों ने राजनीतिक एकता पर वल दिया है किन्हू सामान्य रूप से सभी राजनीतिक रिपब्लिकर ने राष्ट्र के जो प्रभावशाली विकासों किये हैं। यह हैं - मानवीय एकता, जातीय एकता, भाषा, सांस्कृतिक एवं परम्पराओं की एकता, धार्मिक एकता, सामाजिक राजनीतिक आरक्षणें, सामाजिक दिलाशिक की कल्पनाएं और सामाजिक शासन इत्यादी।

इस सभी तत्त्वों में "सामाजिक राजनीतिक आरक्षणें" सबसे अधिक

1- It may be provisionally defined as a body of people who feel themselves to be naturally linked together by certain affinities which are so strong and real for them that they can live happily together, are dissatisfied when disunited, and cannot tolerate subjection to peoples who do not share these ties".

(Ramsay Muir: Nationalism and Internationalism)

उद्धरण गुण-1- आधुनिक राजनीतिक विचारधाराओं: सत्यनारायण दुवे,
पु. 349, 350.

2- "A Nation is a nationality, which has organized itself into a political body either independent or desiring to be independent".

(Lord Robert Bryce: Impressions of South Africa)

उद्धरण गुण-2- राजनीतिशास्त्र के सिद्धांत: आर-सी-अग्रवाल,
पु. 215.
राजनीतिक विधासंहार: डा. सत्यनारायण बुद्धी, पृ. 357.

"Nationalism is an idea, an idea-force which fills man’s brain and heart with new thoughts and sentiments and drives him to translate his consciousness into deeds of organised action."

(Hans Kohn : The Idea of Nationalism)
ढूंढत सूझ या सर्द के अनुष्ठान और प्रगति पर है। वह प्रगतिशील तत्व है।
देशभक्ति राजनीतिका का समान रूप है और राष्ट्रवाद उसका प्रगतिशील
[ऐतिहासिक] स्वीकार है।”

डॉ.गर्नर ने आधुनिक राष्ट्रवाद को स्पष्ट करते हुए कहा है -
"आधुनिक राष्ट्रवाद का यह मूल विशेषता है, कि बहुत से लोग जो एक
राष्ट्रवादियों में संगठित हैं, या तो स्वतंत्र होना चाहते हैं और अपनी इतिहासवादी विचार
बनाए हुए राज्य में रहना चाहते हैं या बहुत हद तक राजनीतिक स्वायत्तता
वाहते हैं जहाँ इस्तिमाल किसी दूसरी राष्ट्रवादियों अथवा राष्ट्रवादी अवधि राष्ट्रवादियों के साथ संगठित
cर दिया जाता है।”

राजनीतिका के विद्वानों को इन परिस्थितियों से कह स्पष्ट होता
है, कि जो समुदाय अथवा समुदाय राष्ट्र प्रेम की भावना है अभिमुख है, वह राष्ट्रवादी है। स्वतंत्र-तत्वांतर का विशाल विश्लेषणात्मक में मौजूद ऐतिहासिक
विश्लेषण है "राष्ट्रवाद शब्द को इसी अर्थ में प्रयोग किया है -

तर्क तदनुसार अनुवादित, वह तथ्य के स्वतंत्र-तत्वांतर के प्रति अनुकूल
तत्वांतर विचार वरुण हुए
राष्ट्रवाद: वह तत्वांतर

1- हिंदी हिंदीता में प्रमाणकार: डा. एडवर्ड, प्रका- रामलाल पुरी, अत्याराम
एक गमन, अनिवारी, प.स. 1950, प. 237.

2- "It is one of the characteristic features of modern
nationalism that most peoples who constitute a nationality
aspire either to be independent and to be under a state
organisation of their own choice and creation or at least
to be accorded a large political autonomy where they are
united with another nationality or nationalities in the
same state”.
(Garner: Political Science and Government)
उद्धृत गँवार - राजनीतिका के विचार विश्लेषण: अरोटी अश्वधाल
प. 611, 612,

3- विश्लेषणात्मक 8/19.
राष्ट्रियता का अभिप्राय भी राष्ट्र प्रेम की भावना है। अथवा राष्ट्रीयता अथवा राष्ट्रवाद दोनों के लिए "नेशनलिज्म" या Nationalism शब्द का प्रयोग होता है। इतो हरिनारायण दोखल को राष्ट्र भावना के लिए प्रयुक्त नेशनलिज्म और राष्ट्रवाद शब्द पर आधारित है। दोखलो का मत है, कि "राष्ट्र" और "वाद" शब्द में दूसरे राष्ट्रों से देश की भावना विकसित है तथा वह अर्थात् राज्यबद्ध शब्द है। संक्षिप्त साहित्य में राष्ट्र प्रेम की भावना इस रूप में विकसित नहीं है कि वह अपने स्वार्थ के लिए अन्य राष्ट्रों से ध्वस्त की उन्होंने धोड़ा और नीचे गिरने को तथा हानि पहुँचाने की केंद्र को बढ़ावा दें। संक्षिप्त साहित्य उदार मानवतावादी राष्ट्रवाद को प्रेरणा देता है। इत्यादि इस अभ्यास में राष्ट्रवाद से हमारा अभिप्राय राष्ट्र प्रेम की भावना नहीं है, न कि संकीर्ण आकृतिक राष्ट्रवाद से।

संक्षिप्त साहित्य में "राष्ट्रवाद" को भावना विकसित रूप में विकसित है अथवा राष्ट्रवाद भावना के जो प्रबंध तत्त्व है, वह निम्नलिखित है -

वाणी राष्ट्र के प्रति स्वरूपित प्रेम भावना।
वाणी राष्ट्र को भौगोलिक तीव्रताओं की रक्षा की भावना
वाणी राष्ट्र की प्राकृतिक संपत्ति नदी, ज़रा उद्यादि के प्रति प्रेम भावना।
वाणी राष्ट्र की रक्षा में आजना सत्ता अर्पित करने वाले जो दुर्योग के प्रति आदर भावना।

प्राचीन संक्षिप्त साहित्य में राष्ट्रवाद -

संक्षिप्त के आधि ग्रन्थ वेद हैं। पदार्थों अथवा राज्यों में राष्ट्र प्रेम की भावना विकसित है जिसमें अभिनव के परमाश्र्य राजा से हुए रजत वर्ण निकल। ते राष्ट्र की रक्षा की अभिनव की जाती थी -

1 - संक्षिप्त साहित्य में राष्ट्रिय भावना: हरिनारायण दोखल, पृ. 29, 30,
आ त्वाहरितसकारिकाये धिक्कविधित्वता विभागिताः।

िर्मिति सब्बि वाणमृत् गा तथा जन्मवस्त्रवि ज्ञान।

इतैत्थिं भाषा चरित्ये: वर्तम इत्याविभागिताः।

उद्धुति हगेष धिवरितकारिकाये राज्यधारण।

मनुष्य राज्य की गुरुत्वा तथा उसके साहित्यकार के लिए वर्ण,

वृद्धि, उपवन और अन्य शिक्षा को वनना करते हैं -

हवं ते राज्य वर्ण्या प्रवं देवको वृद्धितपि।

हवं ते रजाय विष्णुवर्ण्याय राज्यमध्ये गारवान।

पुष्पको को महामुनि मानने की भवना भी सर्वनाम वेदो में ही

उपलब्ध होती है।"3 जिसमे पुष्पको पर निवास करने वाले मनुष्यों के बोध माते-

वारे की भवना का संबंध होता है और वह परस्पर एकता के सूत्र में पीढ़ी

जाते है।

यद्वेद के अनेक मन्त्रों में राज्य शब्द का प्रयोग हुआ है। बाध्यक राज्य

प्राप्तिम को समाना से यह किया जाते हैं तथा राज्य के अभिकर्ष के अवसर पर

राज्य नाम की उपस्थिति किया करते हैं।"4 अनेक रचनाओं से मिलते हो आलोचित

1- यद्वेद 10/173/1, 2।
2- वद्वेद 10/173/5।
3- तन्नो वाचो मध्य्यें वाच भेजको तन्मात्रा पुष्पको तत्त्व पिता ग्राम:।

ि प्राप्तम: तोमहस्तोमयोवस्ताद्विचितरा पुष्पकविधिषयं वर्ण।।

रचना 1/89/4।

धातृ विश्व जनिता नामित्र वनपुरुष मातायो खप्पिठी वदृशयम।।

वद्वेद 1/164/33।

4- अने वद्वेद मृत्युमुक्तयोग्मन्तरस्वादिजी राजस्वविवाह:।

प्राप्तिमक्षरात्वस्ताद्विचित्रु प्रतिमित्युद्रमनन्तन्त्वातै:।

ि पूजासूमीति राज्यदा राज्यमें देहि सवाहा,

ि पूजासूमीति राज्यदा राज्याद्वै देहि सवाहा,

ि पूजासूमीति राज्यदा राज्याद्वै देहि सवाहा,

ि पूजासूमीति राज्यदा राज्याद्वै देहि।।
करने वाले और इच्छाओं का निर्माण करने वाले सूर्य तथा करण, वातु एवं अर्थ
आदि दैवी सत्तियों से जनता श्रद्धाविश्वास करने हेतु एक विशाल राष्ट्र
प्रदान करने का प्रारंभ करानी थी -

आ पात्र विवेक युक्तिभी कल्पनान: संविशयं पुरोपकारणस्त्रियांभि:।
अपूर्वमयं दर्शय वातुर गुरुक्षिप्यार राष्ट्रं सवेरय दत्तं ॥

अधीनमें राष्ट्र की समाज के लिए प्रारंभिक को गवी हैं तथा
राष्ट्र राज्य निमित्त राजा के लिए व्रमण ये पालन की आधिकृता पर बल
dिया गया है -

तेनाध्रमव इम्मणवपतेःभि राष्ट्राय वन्धु ॥
राष्ट्राय महमु वधक तपस्यं पर राज्ये ॥२
इम्मणपण्य तपस्या राजा राष्ट्रं विशेषति ॥३

आनंद स्या राष्ट्राद राष्ट्रं म दल्ल स्वाहा,
आनंद स्या राष्ट्राद राष्ट्रमद्वेद्यादातः,
औरस्या राष्ट्राद राष्ट्रोऽवस्थापति व, दल्ल स्वाहा,
औरस्या राष्ट्राद राष्ट्रमद्वेद्यादातः
अ: परिवारिष्टिः स्या राष्ट्राद राष्ट्रं म दल्ल स्वाहा,
अ: परिवारिष्टिः स्या राष्ट्राद राष्ट्रमद्वेद्यादातः
अ: वतिरिष्टिः स्या राष्ट्राद राष्ट्रं म दल्ल स्वाहा,
अ: वतिरिष्टिः स्या राष्ट्राद राष्ट्रमद्वेद्यादातः
अ: गमनिष्टिः स्या राष्ट्राद राष्ट्रं म दल्ल स्वाहा,
अ: गमनिष्टिः स्या राष्ट्राद राष्ट्रमद्वेद्यादातः

[संस्कृतम् 10/1, 2, 3]

1- अधीनमें 3/8×1,
2- वद्वी 1/29/1, 4
3- वद्वी 11/5 A17,
वेदो में नादियों के प्रति भी आदरभाव प्रदर्शित किया गया है तथा
उन्हें मानव जीवन का महान आश्रय बताया गया है -

इस्म जवाना कुमाडा नमोविश: प्रति स्तोत्र तरस्वति हुस्सूँ ।

तव श्रमोहु द्रियतमु लघुना उप सूर्यशम सरनवे न हुस्सूँ ।।।

प्रायोमन अन्यद्विं मी राजद शक्ति का भ्रोग मिलता है श्लोकः

प्रायोमन में सम्बिद्धत अोजनोज उनस्मृय को राजक कहा गया है - "श्री देवरित्सु।" ²

रेतराय प्रायोमन में प्रजा को ही राजक को संका दो गया है -

तस्सैविषयः तत्वावस्थाननमल इति राजत्राणि ये ।

विशे राजन्याण्यवेदिताः तत्त्वावस्थाननमलित्व।।

वेदों के अतिरिक्त अर्थ महाकाव्य रामायण एवं महाभारत में भी

अनेक स्थानों पर राजक ग्रेम को भावना के दर्शन होते हैं। आदि कवि वाल्मीकि

ने रामायण में राजक को रक्षा के प्रति विशेष रूप से राजकों का ध्यान

अर्चित किया है। राजक को भौगोलिक सीमाओं की रक्षा के लिए राजक

के चारों ओर आई। दृष्य कपाल, उलम भन्ता तथा सीमाओं पर असंख्य

सेनाकों का ध्वनित इत्यादि उपाय वर्णित हैं।³ महाभारत में भी देवद्विशि

नारद राजा गुप्तधिर तो राजक की रक्षा के प्रति तमस रहने का उपदेश

दिया है।⁴

प्रायोमन संस्कृत साहित्यकारों में काल्याण का विषय था।

वह राजक विद कहलाते हैं। उन्होंने इत्तव को विद्विष्य ग्रंथ में विन्दुत्सान के

पुस्तकों को गोव का उत्तर में हिमालय ते लेकर दक्षिण में क्षत्रियाओं तक और

1- ग्रामेद 7/95/5,
2- शतपथ ब्राह्मण 6/7/3/7
3- रेतराय ब्राह्मण 40/3/26
4- रामायण, बालकाण्ड 5/9-13, 6/20-28., अयोध्याकाण्ड 100/54,
   शुद्धकाण्ड 3/1-27,
5- महाभारत समाप्ति 5/28-125,
पारितम से कम्बोज से लेकर पूर्व में करिंग तक का वर्णन किया है। रावण को मारकर अवोध्या की ओर प्रस्थान करते हुए राम के मान्यम से कालिदास ने भारत के पवित्र रथना-साहित्य, पवित्र, पर्माणुरसेन, अदालती, अनुश्रवण, श्राद्धकाय, जन्मतिथि संस्कृति मन्दिर किन्ने नदी, पिल्लू, प्रयाग तथा तरुण नदी इत्यादि का वर्णन करते ही उदार के साथ किया है, 2 जो उनकी राघवेन्द्र की माता का घोषक है। हमारा सम्बंध का लोक ग्रामम् को कालिदास ने हिमालय के वर्णन तक किया है, वह उसे पूजन को मापने का मानदंड मानते हैं-अल्पतिलिपि दिशिश देवतात्मा हिमालयो नाम नगराधिराजः। पूर्वपिरार्त : तोषित निधि वायुम् तिष्ठत: पृथिव्या इव मानदंडः। 3

इसके अतिरिक्त कालिदास को अन्य रचनाओं के तथा अन्य साहित्य-कारों को रचनाओं में भी राघववाद की माता को अभिव्यक्ति हुये है किन्तु हमारा विभेद्य विद्यु स्वातन्त्र्यधर्मार्थगतात्मक महाकाव्य होने के कारण यहां उनका उल्लेख नहीं किया है।

स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत महाकाव्यं से राघववाद—

स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत साहित्य को राघववाद भावना का स्वर्णिम काल कहा जा सकता है व्यक्तिके इस काल मे राघववाद भावनापरक काव्यों की अधिकता रही है। इसका प्रमुख कारण था, इंग्रिंड सरकार की अपने लाभ के लिये उत्पन्न की गयी पत्रिकाशियों जिनसे देशवासियों मे राघववाद भावना को वृद्धि हुये प्राचीन परम्परा एवम् उगामियों का बत है कि राघववाद का उदय केवल अकादमिक शताब्दियों के अंत में हुआ जो आगे विकस होकर सार्थक और व्यक्तिगत बौद्ध की द्रापने वाली एक सर्वमान्य भावना और यदि तब्तो बढ़ी नहीं तो काम से काम

1- रघुवंश, चंद्रगंगा 2- वधु, महोदया 3- हमारा सम्बंध 1/1.
हितिहास की एक प्रमुख निर्णयक भूमिका बन गयी। किंतु विद्वानों का यह मत निराधार है, क्योंकि हम देख सकते हैं कि प्राचीन साहित्य में भी राष्ट्राधिकार की भावना प्रभावित नहीं होती थी।

महाकाव्य में सर्वप्रथम स्वतंत्रता को संपूर्ण महाकाव्य में वर्णित राष्ट्रीय भावना का विकास शुरू करता है, जो कुमार ने इस प्रकार है:-

श्रीमद्रामचारितम, महाकाव्य यह पि संतावरित काव्य है, किंतु विद्वानों का प्रस्तर आ जाने से इसमें राष्ट्रवाद की भावना भी अभिव्यक्ति होती है। संसार के विरुध्द जा जाने की भावना से अपने आभार के दिल का रक्षा का कायम बोध करते गंगा श्री शुकराराम उन्हें उपेक्षा नहीं करते हैं, कि त्यों का पढ़ना कर्तव्य अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर अपने वर्ध का नायकत्व करता है।

श्रीमद्रामचारितम महाकाव्य में भी संत श्री रामदास ने उपवत्ति हृदय को प्रतिमाः मधुमित्र की काला का उपेक्षा दिया है।

राजा रघुनाथ काव्यकथा माधुर्यधारा मधुमित्र गंगाप्रथाणी विश्वासानुसार चौधरी विएक के द्वारा विद्वानों में चर्चा की गई है।

राष्ट्राधिकार महात्मा गांधी के जीवन चरित पर आधारित "श्री-महात्मा-गांधी-चरित्र" नामक सम्पूर्ण महाकाव्य राष्ट्रियक की भावना से अलग होता है। इसमें स्वतंत्रता प्राप्ति तथा राष्ट्रीय एकता को लिये गांधीजी के सत्याग्रह, भारत के अन्तर्गत जगताधि अंतर प्रायात स्वतन्त्रता का राजनीति है। गांधीजी के लिये प्रायात का कामना, नेहरू राम और न्यूयॉर्क ने भी महान तथ्यांकन किया है।

1- Encyclopaedia Britannica, V.12, P. 851.
2- श्रीमद्रामचारितम 8/34-35
3- श्रीमद्रामचारितम 11/36, 39
4- भारतविरालासु 10/159-171
5- वडो, 13/30-34
नन्दा द्वारा उनका अत्यधिक स्वागत तथा उनकी घरीयों को प्यूवल को मस्तक पर लगाना। और प्रेमपरिवार के तथा विदेशी शासकों का अन्धकार करने वाले व्यक्तियों को निन्दा। कवि की राजस्थान प्रेम को धोलक है।

श्री सुभाष्यचरित्र महाकाव्य के नायक श्री सुभाष का समपुर्ण जीवन स्वदेश प्रेम का भावना से औपचारिक है, अतः उनके जीवन को प्रत्येक घटना- इहमालय आश्रय का पालन, सरकारी नौकरों का परिपालन, धर की तस्कर इतिहासों तथा अपने देश का परिपालन, विदेशों में शृंगार कर स्वराज्य के लिए प्रयत्न करना हत्यारी का रोकर एवं यथार्थ वर्णन कर कवि ने वातांकों के मन में राष्ट्रिय भावना उत्पादन करने का प्रयत्न किया है।

श्रीसुभाषचरित्र बोल के पिता श्री वानकोनाथ के द्वारा अभिषेक शासकों द्वारा प्रदत्त "राजबंदी" को उपाधि का परिपालन तथा नेताजी सुभाषचरित्र बोल द्वारा विदेशी व्यक्तियों को तपासकर स्वदेश बाहरी व्यक्तियों को परिपालन को दो बड़ी प्रेरणा उनके राजस्थान प्रेम को परिपालन है। महाकाव्य के अन्वेषण परिक्रिया में आज्ञा हिंदु नेताओं के संकल्प सीत्कर का प्रस्तुतिकरण कवि की राजस्थान प्रेम की भावना को अभिषेक करता है।

पदे पदे कलामलो, सुदा च गाय गीतकास।
जोगीमंदार जीवन, तदमध्यस्थात तथ्या।
प्रायद्वी पिल्लेजातारिन विशेष्टि मानताकार धन्याः।
तथोत्तप तथामन्ने, यथोस्यतोः, ज्ञानः।
पुस्तिकाल प्रबंधान, प्रसुद्धातु तेचरियाः।
विरोधिन्दु तेकमिति, हप्त सिंहनुमुनिनिः।
"विषमानभारतम" महाकाव्य में कवि का उद्देश्य राजनीतिक अवस्थाओं के वर्णन के साथ साथ उनके गोरू लोग का प्रतिपादन करना रहता है। इसका

1- भारतविराटब्रम्ह 13/35-49, 14/3-15, 2- प्रर्भकाव्य 1/15-33,
3- श्रीसुभाषचरित्र 1/18, 19, 6/8, 4- बहादुर, परिशिष्ट लीला, पृ 69
प्रारंभ भी प्रयाग के वर्ष में होता है जो कवि को राष्ट्रगण की माता के प्रतीक है। यह सम्पूर्ण महाकाव्य राष्ट्रवाद की भावना से जोड़ा है। कवि का राष्ट्र-भाव भी हिंदी के प्रति विशेष अभिव्यक्ति के प्रकाश में दिखाइये है और अंग्रेजी भाषा के प्रति भारतीयों का विशेष लक्ष्य देखकर यह दिखाई दे है। 1 दिवेन्द्र ने देश कैद की तथा स्वतंत्रता नेताओं की मिति की है तथा सच्चे राष्ट्रवाद स्वामी द्वारांद्र विदेशकार्य, लोकमान्य बाल मंजुण्डर रूपक, गोपाल भूषण गोविंदे, कवी-द्वारक टैगोर, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, रामचंद्र बोस, जयवर्धन नारायण इत्यादि के प्रति विशेष आदर में प्रकट रहा है। 2 राष्ट्रगण लड़का का वर्ष में कवि के राष्ट्रगण को व्यक्ति करता है। 3 श्री नेहरूविरित महाकाव्य में प्रयाग गंगा, यह उनका इत्यादि निदयों लड़कूलभाव, श्रीमान्महानगर गोता इत्यादि के प्रति विश्वास आदर प्रकट होता है। 4 उन्होंने राष्ट्र के विकास के लिये वर्षाव, मांग-मांग, अन्य मांग समृद्धि और माता-पिता के समाप्त करने का प्रेरणा दी है, 5 जो कवि के राष्ट्रगण को अभिव्यक्ति करते है।

श्री तिलक बांधकार्य: महाकाव्य में लोकमान्य बाल मंजुण्डर रूपक के स्वराज्य प्राप्ति के लिये फिके गये अप्रशासन का वर्षन है, जो पाठकों के हंस्य में राष्ट्रगण को उजवन करता है।

स्वराज्य-विजय नामक सम्पूर्ण महाकाव्य राष्ट्रगण की माता से जोड़ा है। देश के प्रति आत्मा संस्कृति अभिव्यक्ति करने वाले राष्ट्रवादी के प्रति द्वारांद्र शासी के विशेष आदर प्रकट किया है। राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिये प्राप्त हुए देने वाले पुरस्का को कवि मुल नहीं मानता- अन्यतात्तेन्द्रिक हस्ताक्षर वे स्वतत-युग्मे मृता:।

यत: प्रोपकाराय न महत्त्वित मृता: मृता:।

1- विश्वासभारतमू 8/26-34।
2- वही, 9/79-89, 2/64-85, 103, 104, 7/5-19, 22-29।
3- वही, 4/15-22।
4- श्री नेहरूविरित 2/16-21, 14/4-8, 10/19-23, 31-32।
5- वही, 15/30-35।
मूल्यः त तथा राज्य यदि राज्यहेतोः त नं कृत स्थाधृतत्वमेव।
राजस्वारूपदन्तु भाष्य सन्तति : जलदस्येन न जनयोदास। ३१

दाता को किंवद ने मूल्य से भी अधिक हि: कुन्द माना है तथा राष्ट्र
के विकास के लिए स्वराज्य को आवश्यक माना है।

श्रीविश्वाराज्योदयम् महाकाव्य के नाम प्रस्तुति शिवाजी राज्य
स्वतंत्रता के परम उपासक है, आः यह सम्पूर्ण महाकाव्य राष्ट्रवाद को
भावना से भुगूर है। श्रीभद्र, भारत वर्षकार ने इसमें शिवाजी के भायक से
मातृभूमि की स्त्री को प्रेम दी है। उनका मत है: "कि यदि बड़ा राष्ट्र
भी रहना करने, भरण पोखरन और जनि से बुनने राष्ट्र पर आधिपत्य है तो उसको
उन्नति नहीं हो सकती।" २

पूर्वभारतम् महाकाव्य भारत देश के नाम की सार्थकता के वर्णन से प्रारम्भ
मीलाई भारत की प्रारूपिक सम्पदा विवाहय, कार्यकर तथा नजिकों इत्यादि
का वर्णन भी कदिम के राष्ट्र प्रेम का परिचय है। कदिम का सम्पूर्ण देश में परिवार
को भावना एकृत करना, ३ राष्ट्र को सक्ता के लिए आवश्यक तत्त्व है। प्रथमदल
स्वामी ने पारस्परिक कलह को अन्धन को राष्ट्र के लिए धातुक वालया है तथा
इससे राष्ट्र के शुद्धों की अन्वय होने को संभावना प्रकट करना है। ४

सीताचरितम् महाकाव्य में चंदन का प्राचीन होने पर भी भक्तवाद
राष्ट्रवाद को भावना अभिव्यक्त हुई है। रैवाप्रताद द्विदेशों का मत है कि
आश्रयों का राष्ट्र को आपत्ति पुर करने हेतु तत्पर रहना चाहिए। ५ माता,
पिता को अपनी सन्तति का पोशाक राष्ट्र विकास की दृष्टि से लिये चाहिए ६
तथा यथार्थ को अपेक्षा विचयों का राष्ट्र के लिए विनियोग आवश्यक मानना
चाहिए। ७ कति ने भारतीय दोषों को पारस्परिक मित्रता को राष्ट्रकल्याण

1- हराज्यविवाहम् १/४५, १५/३५,
2- श्रीविश्वाराज्योदयम् ५१/५०,
3- पूर्वभारतम् ८/१३,
4- वही, ८/४०-४३,
5- सीताचरितम् ५/७०,
6- वही, ६/७०
7- वही, १०/२१,
के लिए उपयोगी बताया है यही कारण है कि जनकेश्वर और तथा-क्षण की मैत्री
में उसने उल्लास प्रकट किया है।

"नेहरुराय: सौरभ" के नेत्र गो-राम भी बलमूडे प्रताद शाहजाही का मत
है कि इनतम में राज्यवाद भावना का उदय करने के लिए राज्यवादी के विरल
का वर्णन किया जाना चाहिए। जिससे माहित के हद में राज्य देश के कतिपय ब्रांच
भावना उत्पन्न हो। कवि ने इसी भावना से प्रेरित होकर यह महाकाव्य लिखा
है तथा जवाहरलाल नेहरू को अपने महाकाव्य का नामकरण दिया है क्योंकि
उनका सम्धार जीवन राज्य के लेख में समाप्त था। अतः यह पूरा महाकाव्य
राज्यवाद की भावना से अलग है।

के लेन-सहितकर ने जलवाद राज्यवाद में राज्य की स्वतन्त्रता
पर विचार बन देते हुए लिखा है, "कि परतन्त्र राज्य कभी भी शासितसम्पन्न
राज्य नहीं हो सकता है। अतः अपनी माहिति को वृद्धि के लिए हमें ही यह
सह लेना चाहिए, देश की भावी सत्तान के कल्याण के लिए स्वाधीनता संग्राम
के भाग के अवसर हो जैसे लेना चाहिए, अपने परतन्त्र-पूर्वकूट कुट्टे को जो
मूल्यवान बना दी गया है, जला देना माहित और इसके लिए अपने देश के

1- सीतापरितम 8/67
2- नेहरुराय-सौरभ 2/15,
3- न राजनीतिया न दलसंगठनों विरुद्ध वारिष्ठवाद की विवाद

न माननीय सर राज्य भारत-प्रताद-कार्यक राज्यवादरकार

न वैचित्र्य विश्वास भारत-प्रताद-कार्यक राज्यवादरकार

कोणामूलक भावना शक्तियों के बिना विश्वास विश्वास वादरकार

कोषालपारो भावना शक्तियों के बिना विश्वास वादरकार

यथा भेललोककार तथा तनोज चित्र नवराजम्पित

[नेहरुराय: सौरभ, कथापुस्तक 14-16]
द्वारकनों को प्रताप करना चाहिए।” 1 राष्ट्रपति का देश की सुरक्षा के लिए यह उत्साह अवसर की राष्ट्रीय को भावना से प्रेरित है।

नवमाचार महात्मा के प्रारम्भ में विमल विश्वेश्वर तथा भ्रेनगर का वर्णन और पंजे में राष्ट्रपति का वर्णन भी किसी राष्ट्रपति को अभिव्यक्ति करते हैं। इसलिए स्वाधीनता प्राप्ति के लिए अभाव प्रयास करने वालों राष्ट्रनेताओं का भी उल्लेख है।

जनविजय में कवि ने जनता की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है तथा अनिवार्य सर्ग में देश के हित का ध्यान न रखने वाले सत्यी नेताओं को फटकारा है तथा यह पेलावनी दी है, कि राष्ट्र मेरा है में राष्ट्र का है। 2 जनता द्वारा कविता इस उद्देश्य में राष्ट्र के प्रति गौरत्र विश्वास किया है। महात्मा में सुभाषचंद्र बोहे, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरु लीलाधार श्रीमती हस्तियादि नेताओं का राष्ट्रपतियां वर्णन पाठकों के हृदय में राष्ट्र प्रेम को भावना उत्पन्न करता है।

झॉकी को रानी लक्ष्मीवाई के जीवन वरिष्ठ पर आधारित “झाँसी रवैरी वरिष्ठ” नामक संपीठ महात्मा राष्ट्रपति को भावना से आसफ़ी उल्लेख है। अंग्रेजों को दासता से भारतवास को मुक्त करने के लिए रानी लक्ष्मीवाई द्वारा प्राचीनों को बाजी लगाकर अस्तित्व प्रदान किया गया भारत का वर्णन तथा अन्त में दीर्घति को प्राप्त होना, प्रत्येक भारतवासी को राष्ट्र सेवा की प्रेरणा देता है।

पीरहलिया महात्मा यहाँ प्रस्तुती द्वारके के वोरसम तनहनी प्राप्ति धान्ता पर आधारित है किन्तु इसमें भी कवि ने देश को तत्कालीन दसा का

1- न महत्त्वलोके विकल्पना शास्त्र: 11
ब्लेंडर दृ:व जनमुक्ति सन्योगों वे हमें भारत तुलनात्मक रहें।
ब्लेंडर मौदर्य परिवारकपुर जो हमें वोरसम पराँ प्राप्त हो गए।
[समालोचना: 12/51, 55]

2- राष्ट्रपति महात्माजयिन राष्ट्र प्रस्तुतियां विभाग में झारखंड का।
[समालोचना: 15/59]
वर्णन किया है तथा देश को अवनति को और ले जाने वाले नेताओं को चारित्रिक सृष्टि को निन्दा को है। ¹ अन्तिम तर्क में "भारत के गौरव को रक्षा करने का उपदेश दिया है", जो केवल के राष्ट्र प्रेम को आभारित करता है।

"मौर्यपत्रोदयम" नामक सम्पूर्ण राजकाल्य राष्ट्रवाद की भावना से आौरूप है। ² उन्होंने राष्ट्र को चिन्ता में अधिक दर्शाया गया है। ³ धृतराष्ट्र स्वामी ने राष्ट्र का वास्तविक हर्ष संभालते हुए लिखा है "कि भाषा, देश-भक्ति, समय और संस्कृति राष्ट्र के प्राण है। ⁴ स्वार्थी व्यक्ति को चुनना कोडों से दो गये हैं, जो राष्ट्र के अन्न को नहीं करते हैं। राष्ट्र को तेज़ी करने वाले सहजों के जीवन के लिए कल्पना प्रकाश रहने का कामना की गई है, ⁵ जो स्वामीजी ने देशभक्ति की परिवारक है।

¹- दीर्घरचण 11/51-77।
²- "रघुवीरमा भारत गौरवं तस्मिन्"
³- दीर्घरचण 12/24।
⁴- मौर्यपत्रोदयम 11/3-8।
⁵- तद्धुशाहू वाष्ट्रवादो वाविदेशो वा,
   नेल्द्व राष्ट्रं राष्ट्रविशा विप्रिक्षित।
   भाषा, भक्ति: समयता, संस्कृतिविदेशो
   त्येन्द्रराष्ट्रो राष्ट्रविक्ष्मिन् विप्रिक्षित।
   वाणिज्य, धैर्यो, वार्तितम् प्रथुता-
   भाषाः, भक्ति: समयता, संस्कृतिविरचन।
   केवल सहज: प्राणिलयं माहुमभ्रमो
   राष्ट्रं प्राणं राष्ट्रविश्वार्थिपित।
   वही, 15/41, 51।
⁵- वही, 15/52,
"श्रीमल्पतपराराणयम्" के नायक महान स्वतन्त्रता प्रेमी राजस्थान के शुरुवार प्रसंगी मदराजा प्रताप हैं अल: यह आज्ञात राज्यवाद की भावना है और तुर्प्रोत है । इसका प्रारम्भ प्रत्यक्ष देवता सूर्य तथा देवमाता के प्रत्यक्ष प्रतापी देवता "प्रताप" को श्रेष्ठ गय अभिवन्दन के साथ होता है । तथा अन्न मदराजा प्रताप के देवतालय उपेक्षा से होता है। मदराजा प्रताप दरा वन में जाकर मामुख मनो मोहत रचना के लिए केवल की प्रबोधित करना तथा धनधारी छद के आकार अपने तेजकरों के लिए किया गया सम्बोधन पाठकों के प्रख्यात में उम्मीद के भावना उत्पन्न करने वाले है।

"भोग्यधर्मरितम् महाराणण में सहु, विनम्प, धंड, यह तथा, सरस्वती इत्यादि नदियों काशी, मदरा अथवा इत्यादि स्थानों का वर्णभारतवार की सर्वालकुवाटा का प्रतिपादन करने के उद्देश्य से किया गया है। 5 भोगम्र ने पुरुषितकर को उपदेश दिया है - "कि राजा को अपने राज्य तथा राजस्थान में रहने वाले लोगों के योग-केम के लिए सदैव प्रयत्न करना चाहिए। हमें राजा की सेवा को ईश्वर को पुजा भाव है। 6 भोगम्र ने राजस्थान के रूप को प्रकटि करना राजा का कौशल बताया है तथा उपदेश दिया है कि राजा को अपने अंशक की अभिन्न राजस्थान को नहीं जलाना चाहिए। 7 भोगम्र

1- श्रीमल्पतपराराणयम् नौनी दित्यमहेन्द्रम्।
कर्मेऽवलम्बमाराण्य सूर्य प्रत्यक्षेविलम्तम्।
2- किरि, विनमा-काण्ड, सप्तम सर्ग,
3- किरि, उदय-काण्ड, अष्ट सर्ग,
4- श्रीमल्पतपराराणयम्, शिलिघाटकाण्ड, ईतिहासिक सर्ग,
5- भोग्यधर्मरितम् 1/12-17,
6- नृप: स्वराजगुप्तत्व तथा दातितवा।
स्वाय योगाय पौश सर्वदा।
राज्यस्वस्व निगमनविनयी
प्रभो: स्वराजळ विनित्तता: प्रजा:।।
7- किरि, 17/26, 27, 28,
दारा कृष्ण से अनिल समय में राणा को तहरा देने की, की गई प्राधिक उनके 
राजप्रेम को अभियुक्त करती है।

अन्तररिख्चवाद -

अन्तररिख्चवाद भी राणा के समय ही अन्तररिख्चवाद का विकास है,
जिसका समान समय को अन्तररिख्चवाद का विकास है। अन्तररिख्चवाद का अभियुक्त
यह है "कि संसार के सभी राणा परस्पर मिलता है तथा, कोई राणा किसी
राणा के हूणना के विद्रोह को स्वाधीनता का सम्बन्ध करें और
अपनी विदिवता को शान्तिमय तरीकों से निवारण। विश्व में शान्तित्व बनाए
रखने तथा जीवन को रोकने के लिए 1920 ई. में राणा संघ की स्थापना की
गई। 2 किन्तु राणा ने अपनी स्वाधीनता प्राप्ति का त्याग नहीं किया अतः
राणा संघ को अपने लक्ष्य में सक्षम नहीं मिली। इसके पश्चात् 1945
ई. में संघ के राणा संघ की स्थापना हुई। 3 आज संघ के राणा संघ का असल
है कि ज्ञात कि ज्ञात के नई जीवन भिन्न है जो निष्पक्ष निर्धारण नहीं किया जाता जिस
राणा का संघ के राणा संघ में बदलता है यह अपने सम्पूर्ण राणा के किल्ले
निर्धारण नहीं देना। अतः समस्याओं के अनल नहीं हो पाता और राणा परस्पर
लड़ते रहते हैं।

इसके पश्चात है कि राणा तथा अन्तररिख्चवाद, दो विद्वानों
विचारधाराओं हैं। जो स्पष्ट अथवा राणा, राणा का सम्बन्ध है, जिस
अन्तररिख्चवाद का विचारधारा है। राणा का बनिवाद किंतु विद्वान अन्तररिख्चवाद
की स्थापना नहीं की जा सकती। यह तथा संसार के सब देशों अपने-अपने राणा
प्रेम की त्याग नहीं करते किसी एक अथवा हूण राणा की अपने राणा प्रेम
का त्याग कर अन्तररिख्चवाद के दंड में दंड जाना आत्माशक्ति के अतिरिक्त और

1- यहीं, 20/21,
2- राजनीतिविद्वान के विचार: आर.ती.अमृताल पृ. 356, 365,
3- यहीं, 363-365,
वेदों में राजनीति के साथ-साथ मानवतावाद की भावना भी हुई-गोचर होती है। शासनकर्त्ता ने मुख्यतः अपनी शक्ति, धन, आप, शीर्ष आदि को शासनित्वकर्त्ता सर्वनासचर कामों में प्रदत्त करने के लिए प्रेरित करके विश्वसनीय का उपदेश दिया है। राजनीति एवं तज्ज्वित के समस्त के भी शासनित्व बनाए रखने की आवश्यकता की गयी है। वेद में शासनकर्त्ता ने हद का व्यक्ति की है, "कि विवेक के लिए मानव उन्हें भिन्न को हुई-गोचर दें। और दे भी विवेक के लिए मानव को भिन्न को हुई-गोचर दें।" यही कहते हैं कि धन छोड़ने का इच्छा न करे जो रचना को प्राप्त है, उसी का भी गोचर करें। मध्यकालीन संस्कृत साहित्य में मानवतावाद के दर्शन आये हैं जिनमें हमारा दुम्य रहस्योन्तर संस्कृत महात्माओं में मानवतावाद की समीक्षा करता है।

स्वातन्त्र्योत्सवर्ती महात्मगौरीधर्मितम में कवि श्री भारत को स्वतंत्रता के साथ-साथ अन्य देशों की स्वतंत्रता 1- ब्रह्मध, 7/35/2, 7, 9, 12, 2- वही, 7/35/10, 12, 3- उपेक्षा 36/10, 4- वही, 40/1.
को भी कामना को है।\(^1\) महात्मा गाँधी की भारत और दु:खी दिशाज के कल्याण के लिए चिन्तित हैं.\(^2\) कवि का मत है कि दुःखी का अश्वाला करने में अस्वा उत्पर या दया करनी में अपने-पराये दुःखियाँ या विदेश दासी हो का विचार नहीं करता या हिंदीः यही मानकता है।\(^3\)

\section*{प्रायोगिक दिव्यदीर्घ के मत में "समस्त संगठन को आत्मसमर्पण है, सभी वर, अधिकारी अपने है वह आर्य सिद्धान्त श्रेष्ठ है। उन्होंने राष्ट्रवाद अपने राष्ट्रवाद-राष्ट्रवाद, राष्ट्रवाद इत्यादि को निन्दा की है।\(^4\) परन्तु विचार उनके मानवतावादी हृदिकोण को अभिमानित करता है।}

श्रीधार्मिक संवेदनान्दविरित" महाकाव्य में मानवतावाद की भी अभिमानित है। इसके नए विवेकानन्द विवाह के सहयोग को अशांत देखकर चिन्तित है।\(^5\) उन्होंने विवाह को निन्दा के लिए अनेक प्रयास किए है। समस्त विवाह को शक्ति का पाठ पढ़ाया है।\(^6\) राज्यतो ने देश का सेवा होने के साथ-साथ विवाह का भी सेवा होने को प्रेषित दी है।\(^7\)

श्रीज्ञानमण्डल महाकाव्य के मार्ग परंपरित नेष्ट तमुर्षी विवाह के मुख्यौत का एकोलंकरण कराने के लिए चिन्तित है।\(^8\) उन्होंने प्रत्यया है कि विवाह के सभी राज्यों का पूर्वों पर एक शासन हो और विवाह के मध्य में पूर्ण वस्तू के साथ जोड़ी है। विवाहता के अनमोल दासों का विवाह रंग जाए तो मुख्य दासी की प्रूढ़ित का छोड़कर अधिक से लेते हैं।\(^9\) कवि ने विवाह शास्त्र

1- पारंजतापार, 13/32, 33,
2- वही, 21/4,
3- पारंजतापार, 2/52,
4- विज्ञानमण्डल, 8/19, 20,
5- श्रीधार्मिक संवेदनान्दविरित, 133-43,
6- वही, 7/56,
7- वही, 11/60,
8- श्रीज्ञानमण्डल महाकाव्य, 19/1,
9- वही, 19/2-4,
के लिए राष्ट्र संघ को स्थापना का उल्लेख किया है किन्तु उसके लिए राष्ट्र संघ के सदस्यों को पूर्ण तरह से स्वार्थी सामन रखित होना आवश्यक माना है।

उनके मत में राष्ट्र संघ की स्थापना हीजाने पर भी, उसके सदस्यों द्वारा स्वार्थी दृष्टि का परित्याग न करने के कारण विश्व शान्ति व्यवस्था के सामने के समान हो गये।

राष्ट्र स्वतंत्रता व्यवस्था के अनुसार मुस्तफा मोहनता और पश्चिम दोनों की रुकत है। एक के आश्रय में देखते और दूसरे से अंतरत जनसंघ के विचार है कि मुस्तफा को दूसरे मुस्तफा की सहायता करने वालों में समान हैं।

कार्तिक का विचार है, कि मुस्तफा को दूसरे मुस्तफा की सहायता करने वालों में समान हैं।

किसी के विचार में बैठने के लिए देखते हैं विदेशी दृष्टि का परित्याग कर दें तथा अपने को एक मूल में रेखा तहत अनुभव करें, कबीर, श्लोक, हिंदु, निम्न नाराज विवाद बाह्यिक का लेख कर दे लें तब संसार में शान्ति निर्मित है।

मुक्तिदोषों के यह विचार उनके मानकालवाद के परिवर्तक है।

ढ़ा: परमाणु शासन के महाक्रांतियों में भी मानकालवाद की मान्यता दुर्भिक्षों पर होती है। कथिते ने कहा विज्ञापन में कहा कि फिर और मित्रों के संसार में तृष्णा शान्ति के लिए निरंतर प्रयास करते रहें।

उनका मत है कि सारे पृथ्वी एक है, तमी मुस्तफा की वही आदर्शर रहना चाहिए।

स्वतंत्रता व्यवस्था संकुल महाक्रांतियों पर समृद्ध तर्क से विचार करने पर हम इस निर्धार पर पहुंची हैं, कि इस तुलन में विवाद महाक्रांतियों में राष्ट्रवाद

1- प्रीतम अहिल्या तिमिंडालवाद 19/5, 6.
2- प्रीतम, 19/13, 14.
3- प्रीतम, 19/7.
4- प्रीतम, 19/9-12.
5- सच्चार्य हर विवाद मुस्तफा महाक्रांति मानिस:

प्रायाह: सत्ता केंद्र संसार शान्ति व्यवस्था 11.

जनविज्ञान 15/62.

6- प्रीतम, 12/57.
को भावना हो सर्वाधिक उपलब्ध होती है। कुछ महाकाव्य तो राष्ट्रिय भावना
के ही प्रसार हेतु लिखे गए हैं लेकिन उन महाकाव्यों में व्यक्ति राष्ट्र प्रेम,
आत्माकाय या उन राष्ट्र प्रेम नहीं है। तत्पुरुष का काव्य राष्ट्र कल्पना की कामना
के साथ-साथ विश्व कल्पना की कामना भी करता है। वह अपने राष्ट्र की
स्वतन्त्रता और स्वाधिकार की रक्षा के साथ-साथ इतने राष्ट्रों की स्वतन्त्रता
और स्वाधिकार का भी सम्मान करता है, अन्य राष्ट्रों को अपने अधीन
करना उन्हें अमोघ नहीं है। आत्माकाय काव्य के यह विवाह अल्लातिहाद को
भावना से भी सुसंगत है, जिसे हम मानवता वाद कह सकते हैं।